

2+2 वारता की मेज़बानी करेगा भारत

चर्चा में क्यों?

भारत 6 सतिंबर को संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ 2+2 वारता के उद्घाटन दौर की मेज़बानी करेगा। इस मंत्रसितरीय बैठक में द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्वकि मुद्दों को शामिल किया जाएगा। इस वारता का नेतृत्व भारत की ओर से विदेश मंत्री सुषमा स्वराज तथा रक्षा मंत्री नरिमला सीतारमण और अमेरिका की ओर से राज्य सचिव माइक आर. पोमपेओ तथा रक्षा सचिव जेम्स मैटसि करेंगे।

प्रमुख मुद्दे

- दोनों देशों के बीच सामरकि और सुरक्षा संबंधों को मज़बूत करने के उद्देश्य से 2+2 बैठक में साझा हति से संबंधित द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्वकि मुद्दों की वसितृत शर्तेखला शामिल होगी।
- जून 2017 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा के दौरान दोनों पक्षों ने रणनीतिक सतर की वारता के लिये "2+2" वारता पर सहमतविधिक्त की थी।
- पछिले साल जून के बाद बैठक की घोषणा दो बार स्थगित की जा चुकी है क्योंकि अमेरिका के ईरान विशेषीय प्रतबिंध भारत के ऊर्जा परिवर्तन को प्रभावित कर सकते हैं।
- वारता का यह नया प्रारूप ओबामा प्रशासन के दौरान आयोजित दोनों देशों के विदेश और वाणिज्य मंत्रियों के बीच हुए रणनीतिक और वाणिज्यिक वारतालाप को प्रतिस्थापित करता है।
- वारता का प्रमुख फोकस संचार, संगतता, सुरक्षा समझौते (COMCASA) जैसे प्रमुख रक्षा समझौतों को अंतिम रूप देने पर होगा। COMCASA, एक बुनियादी रक्षा संधि है जो भारत को अन्य देशों से महत्वपूर्ण, सुरक्षित और एनक्रिप्टेड रक्षा प्रौद्योगिकियों को प्राप्त करने में सक्षम बनाएगी।

ईरान के खलिफ प्रतबिंध

- '2+2 वारता' की घोषणा ईरान और रूस पर लक्षित अनपेक्षित प्रतबिंधों से जुड़ी भारत की संभावनाओं के बीच आई है।
- अतीत में अमेरिका ने भारत की ऊर्जा सुरक्षा में ईरानी काच्चे तेल की केंद्रीय भूमिका निभाई थी। साथ ही, नई दलिली ने धीरे-धीरे अमेरिकी प्रतबिंधों का अनुपालन करने और वाशिंगटन से आवश्यक छूट को सुरक्षित करने के लिये अपने तेल आयात को कम कर दिया।
- अमेरिका ने भारत सहित सभी देशों से कहा है कि वे 4 नवंबर तक ईरान से अपना तेल आयात बंद करें। अगर भारत इसका पालन नहीं करता है तो देसी कंपनियों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा।
- ईरान को लेकर ट्रंप प्रशासन ने अतिवादी रुख अख्तियार कर लिया है और इस मोरचे पर वह कोई ढील देने को तैयार नहीं है। वही, ईरान भी इस मामले में तीखे तेवर दिखा रहा है। उसने भारत को हादियत दी है कि ईरान के साथ तेल आयात कम करने का असर दोनों देशों के रशितों पर पड़ेगा।
- यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अतीत में भारत ने ईरानी तेल की खरीद के संबंध में प्रतबिंध के खिलाफ का सामना किया है।
- रूस के साथ भारत के रक्षा सौदों पर भी अमेरिका की टेढ़ी नज़र है। भारत रूस से सतह से हवा में मार करने वाली एस 400 मसिसाइल खरीदने की प्रकरणी में है जिस पर अब अमेरिकी ग्रहण लग गया है। असल में अमेरिका ने उन देशों पर प्रतबिंध लगाने का प्रावधान किया है जो उसके द्वारा काली सूची में डाली गई 39 रूसी कंपनियों से किसी भी प्रकार का वित्तीय लेन-देन करेंगे।
- ईरान और रूस से जुड़े मसलों के अलावा व्यापार के क्षेत्र में भी भारत-अमेरिका रशितों में तनाव बढ़ा है। ट्रंप प्रशासन नई दलिली पर आयात शुल्क घटाने का दबाव बढ़ा रहा है।
- यह पाकिस्तान के चुनावों के बाद दोनों पक्षों के बीच उच्चस्तरीय बातचीत का पहला दौर होगा जो जुलाई के आखिरी सप्ताह में समाप्त होगा।

वारता का महत्व

- यह वारता इस क्षेत्र में समान विचारधारा वाले देशों के लिये विचारों को साझा करने का मौका है तथा पारस्परिक उद्देश्यों तक पहुँचने के लिये समन्वय रचनात्मक तरीका भी है।
- उल्लेखनीय है कि दोनों पक्ष भारत-प्रशासन क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा कर सकते हैं, जहाँ चीन अपनी मौजूदगी बढ़ा रहा है। भारत, वारता के दौरान ट्रंप प्रशासन के रूस के खलिफ प्रतबिंधों के कारन भारत पर पड़ने वाले प्रभाव का मामला उठा सकता है।

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/india-to-host-us-for-talks>